P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9* December 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

संवेगात्मक बुद्धि के विभिन्न आयामों का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सहसंबंध

निशा मिश्रा
शोधार्थी,
शिक्षा विभाग,
मेवाड़ विश्वविद्यालय,
राजस्थान

शुभ्रा मंगल
प्राध्यापक व प्रधानाचार्या,
चेतराम शर्मा कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन,
नॉएडा

पूनम शर्मा
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा विभाग,
बी. एल. एम्. सी. ई. नई दिल्ली

सारांश

वर्तमान समय में हर व्यक्ति अपनी सफलता के परचम ऊँचे आसमान में लहराना चाहता है । किन्तु कई बार उसकी भावनाएँ उसके पैरों में बंधन बन जाती है । यदि हमें अपनी भावनाओं को बुद्धिमत्ता से संचालित करना आ जाए तो हम निश्चित तौर पर सफल हो सकते हैं। इमोशनल इंटेलिजेंस विद्यार्थियों की सफलता का महत्वपूर्ण सूचक है। प्रस्तुत शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य संवेगात्मक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि के साथ संबंधों की जाँच करना है। प्रस्तुत शोध करने के लिए शोधकर्ता ने अपनी जनसंख्या को दिल्ली राजधानी क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा ग्यारहवीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों तक सीमित किया तथा न्यादर्श का चयन करने के लिए निरुद्देश्य तकनीक का प्रयोग करके दिल्ली राजधानी क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों से लगभग 430 छात्रों को चुना गया । जिसमें से पूर्णता भरे गए 402 छात्रों को ही सांख्यिकीय गणना के लिए चुना गया। जिसमें से 196 महिलाएं थी और 190 पुरुष शामिल थे। सरकारी और गैर–सरकारी विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 192 और 194 थी तथा आर्ट्स, कॉमर्स व साइंस के विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 131, 133 और 122 थे। भावनात्मक बुद्धि गुणांक को आंकने के लिए शोधकर्ता ने अरुण कुमार द्वारा निर्मित इमोशनल इंटेलिजेंस स्केल (EIS) का प्रयोग किया गया तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करने के लिए विद्यार्थियों के CPGA अंकों को नोट किया गया । इस शोध में स्वतंत्र व परतंत्र के मध्य संबंधों की जाँच पियर्सन प्रोडक्ट मोमेंट कोर्रिलेशन सांख्यिकीय सूत्र के द्वारा की गई । इस शोध के परिणाम के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ धनात्मक सार्थक संबंध है, साथ ही संवेगात्मक बुद्धि के चारों आयामों का भी शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक संबंध है । इसके साथ ही शोध के परिणाम यह भी संकेत करते है कि प्रस्तुत आंकड़ो में लिंग के आधार पर संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, जबकि सरकारी और गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर है । इनका माध्य ये साबित करता है कि सरकारी विद्यालय के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर गैर–सरकारी विद्यालय के छात्रों से उच्च है । यह खोज ये संकेत भी करती है कि वर्गों (आर्ट्स, कॉमर्स और साइंस) के आधार पर गणना करने पर संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया गया ।

मुख्य शब्द : संवेगात्मक बुद्धि, भावों की समझ, अभिप्रेरण की समझ, समानुभूति, संबंधों का संचालन और शैक्षिक उपलब्धि।

प्रस्तावना

"शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य के बौद्धिक ज्ञान, संवेदनात्मक भावनाओं तथा कलात्मक बोध को बढ़ाना है।"

(इंदिरा गाँधी)

सफलता जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, यह व्यक्ति की कड़ी मेहनत, लगन, निष्ठा, योग्यता, बुद्धिमत्ता और सकारात्मक व्यवहार की साक्षी होती है। हर व्यक्ति की इच्छा होती है कि वह जीवन के उच्चतम शिखर पर पहुँच जाए। विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक उपलब्धि सफलता का बहुत बड़ा सूचक है। बच्चों की सफलता माता–पिता के जीवन का प्रमुख उद्देश्य है । हर माता–पिता अपने बच्चे को सफलताओं के शिखर पर देखना चाहते हैं। ऐसी अवधारणा रही है कि बुद्धिमान तथा प्रतिभाशाली बच्चों का भविष्य सफल होता है। इस दिशा में हुई अनेक शोधों ने ये पाया गया कि बचपन में प्रतिभाशाली और प्रखर बुद्धि वाले बालकों आगे अपने जीवन क्षेत्र में सफल व संतुष्ट हो यह आवश्यक नहीं। पिछले कुछ दशकों से विश्व स्तर पर सफलताओं व

असफलताओं के कारण को जानने के लिए अनुसंधान किए जा रहे हैं । अनगिनत शोधों ने यह सिद्ध कर दिया है कि व्यक्ति की सफलता विभिन्न संज्ञानात्मक एवं गैर संज्ञानात्मक क्षेत्रों से प्रभावित होती है।

विश्वस्तरीय खोजों ने यह प्रमाणित किया है कि गैर संज्ञानात्मक क्षेत्रों जैसे– संवेगात्मक बुद्धि, स्वाभिमान, पढ़ने की आदत, व्यक्तित्व के लक्षण, उपलब्धि अभिप्रेरण, आत्मविश्वास, घर व समाज का पर्यावरण आदि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को बहुत प्रभावित करती है। (यटेस (2006); गाखर एस॰सी॰(2003); पेट्रीडेस एट अल (2004); चमोर्रो–प्रेमूजिक एवं फुर्न्हम, (2006);बंसीबिहारी प॰ एवं सुरवाड़ेअल॰ (2006); नसीर, एम॰ एवं मसरूर आर ॰ (2010);(क्रोनसोए, जॉनसन एवं एल्डर, (2004); बेर्रिक, एम॰आर और माउंट, एम॰ के॰(1991); दी राड बी॰ एवं स्चौवेंबर्ग, सी॰(1996); चौधरी, मोहम्मद (2006); टेला ए॰(2007); नोनिस और हडसन, (2008); ड्वेक बी. सी॰ एस॰ और एल्लियट, ई॰ एस॰ (1983); डॉ अवाम रिफ़्फ़त–उन–निसा एट अल॰ (2011)।

विश्व के अधिकतर शिक्षाविद, नेता, मनोवैज्ञानिक,अनुसंधानकर्ताओं ने स्वीकारा है कि संवेगात्मक बुद्धि (इमोश्नल इंटेलिजेंस)का मनुष्य के सफलता पर सीधा प्रभाव पड़ता है। यह केवल शैक्षिक उपलब्धि को ही सुदृढ़ नहीं करता बल्कि भावनात्मक बुद्धि की आवश्यकता जीवन के विभिन्न कौशलों को सीखने, शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए भी होती है। इसी कारण अनेक विद्वानों ने भावनात्मक गुणांक को मनुष्य की सफलता के लिए बुद्धिलब्धि गुणांक से अधिक महत्वपूर्ण माना है।

सन 1940 में सालवोय और मेयर ने सबसे पहले इमोश्नल इंटेलिजेंस यानि भावनात्मक बुद्धि शब्द से दुनिया की पहचान करवाई। परंतु इस शब्द और इस सिद्धान्त को दुनिया में प्रसिद्ध करने का श्रेय हार्वर्ड विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान विषय में पी. एच्. डी. करने वाले तथा इससे संबन्धी अनेक लेखों के लेखक 'डेनियल गोलमेन' को जाता है। उन्होने सन 1995 में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'इमोश्नल इंटेलिजेंसः व्हाई इट कैन मैटर मोर दैन आई क्यु। (गोलमेन, डी. 1995) के द्वारा इस सिद्धांत को फैला कर शैक्षिक व व्यावसायिक जगत में क्रांति ला दी। उन्होने अपनी पुस्तक 'व्हेयर मेक्स ए लीडर'के द्वारा लोगों को समझाया कि बुद्धि और प्रतिभा का जीवन में महत्व है किन्तु जीवन में सफलता और संतुष्टि के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता का होना अंत्यन्त आवश्यक है।

भावनात्मक बुद्धि गुणांक से आशय यह है कि मनुष्य अपनी व्यक्तिगत भावनाओं जैसे प्रेम, उल्लास, क्रोध, उद्वेग, खुशी, तनाव, घृणा आदि को पहचान कर, समझकर उन्हें इस तरह से संयमित, व्यवस्थित एवम् निर्देशित करे कि वे उसकी सफलता और उद्देश्य पूर्ति में सहायक हो सकें। मनुष्य अपनी भावनात्मक बुद्धि, अपनी व्यक्तिगत प्रतिभा और कौशलों का प्रयोग करके जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता के परचम लहरा सकता है। साथ ही वह दूसरों की भावनाओं का ध्यान रख कर प्रतिक्रिया करके अपने चारों ओर एक स्वस्थ वातावरण का निर्माण भी कर सकता है, जिससे भविष्य की सफलताएँ और सुनिश्चित हो जाती है। वास्तव में अपनी भावनाओं को भली–भांति परखना और उनका उचित दिशा में निर्देशन करना ही भावनात्मक बुद्धिमत्ता है।

भावनात्मक बुद्धि को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है,*"भावनात्मक बुद्धि उस योग्यता की ओर संकेत करती है, जिसके कारण एक व्यक्ति अपने और दूसरों के भावों को महसूस करता है, समझता है, नियंत्रित करता है और उनका मूल्यांकन करता है।"*

"स्वयं के व्यक्तिगत विकास के लिए भावों को जानने की, विचारों को सरल बनाने के लिए भावों को एकत्रित करने की, भावों को समझने की और भावों को नियंत्रित व व्यवस्थित करने की योग्यता ही भावनात्मक समझ है"। (मेयर और सालवोय1997)

भावनात्मक समझ केवल व्यवसायिक सफलता के लिए ही नहीं अपितु अपने सामाजिक, पारिवारिक व व्यक्तिगत जीवन के लिए भी लाभकारी है। अपनी भावनाओं, संवेगों को समझना उनका उचित तरह से प्रबंधन करना ही भावनात्मक समझ है। व्यक्ति अपनी 'भावनात्मक समझ ' का उपयोग कर सामने वाले व्यक्ति से ज्यादा अच्छी तरह से संवाद कर सकता है और ज्यादा बेहतर परिणाम पा सकता है।

संवेगात्मक बुद्धि की विशेषताओं का वर्णन करते हुए विद्वान सर्वसम्मति से मानते है कि मनुष्य में बुद्धि लब्धि गुणांक जन्मजात होता है तथा इसे बढ़ाया नहीं जा सकता किन्तु भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास किया जा सकता है, एवं यह मानव के सफल जीवन को अधिक प्रभावित करती है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण वर्तमान समय में यह आकर्षण का बिन्दु बनी हुई है।

व्यक्ति के भावनात्मक पक्ष पर आधारित योग्यताओं व शील गुणों के समुच्चय ही भावनात्मक बुद्धि है। संवेगात्मक बुद्धि की विशेषताएं :–

1. भावनात्मक बुद्धि सामाजिक समझ का ही एक प्रकार है जो इंसान को अपने तथा दूसरों के विचारों को समझने की समझ पैदा करती है।
2. यह बुद्धि दो व्यक्तियों में विभेद करने की क्षमता उत्पन्न करती है। इससे मिली सूचनाओं के आधार पर कोई मनुष्य अपनी चिंतन एवं क्रियाओं को निर्देशित करता है।
3. भावनात्मक समझ संवेगों को समझने, पहचानने, उनका प्रबंधन करने और उन्हें निर्देशित करने में सहायक होती है।
4. यह(ई. क्यू.) आई. क्यू. से अधिक महत्वपूर्ण होती है क्योंकि यह जीवन के अनेक क्षेत्रों में सफलता दिलाने में सहायक है।

जॉन मेयर व पीटर सेलोवे ने संवेगात्मक बुद्धि के पांच तत्व बताए है :–

1. स्वयं को अभिप्रेरित करना
2. संवेगों की पहचान और उनका प्रबंधन
3. अन्यों को अभिप्रेरित करना
4. दूसरे के भावनाओं को समझना
5. अन्तवैयाक्तिक संबंधों को भली–भांति संचालित करना

डेनिएल गोलमेल अपने मॉडल को कुछ इस प्रकार प्रदर्शित किया–

1. स्व–जागरूकता
2. आत्मनियमन
3. आत्म–अभिप्रेरण
4. समानुभूति–सहानुभूति
5. सामाजिक दक्षता

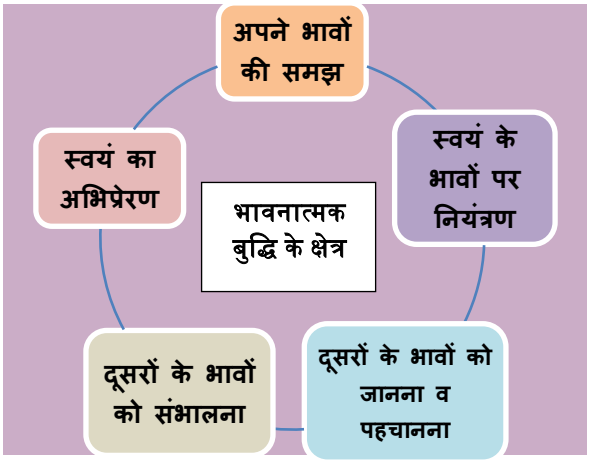

समस्या कथन

संवेगात्मक बुद्धि के विभिन्न आयामों का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सहसंबंध

शोध का महत्व

मनुष्य की भावनाएं उसके काम, व्यवहार और शिक्षा में हस्तक्षेप करती हैं. तथा हमें सही निर्णय नहीं लेने देती। जबकि संवेगात्मक बुद्धि वह समझ है जो हमें जीवन के हर क्षेत्र में सोच–समझ कर भली–भांति कार्य करने में मदद करती है। इस दिशा में अनेक शोध कार्य हुआ है। परन्तु भारत के राजधानी क्षेत्र दिल्ली में शोधकर्ता को इस विषय में पर्याप्त शोध नहीं मिले। शोध कर्ता दिल्ली क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का उनकी उपलब्धि के साथ संबंधों की खोज करना चाहता है। इस खोज का मुख्य उद्देश्य भावनात्मक समझ और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध को देखना है तथा यह जानने का प्रयत्न करना भी कि भावनात्मक बुद्धि के किस तत्व का शैक्षिक उपलब्धि के साथ कैसा संबंध है?

साहित्य की समीक्षा

अमालू, एम. एन. द्वारा सन(2018) वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध का प्रयोग करके यह जाँचने का प्रयत्न किया कि क्या संवेगात्मक बुद्धि माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की भविष्यवक्ता होती है? प्रस्तुत शोध में आंकड़े इमोशनल इंटेलिजेंस स्केल तथा गणित विषय की उपलब्धि परीक्षा के आधार पर एकत्रित किए गए। इस शोध के परिणाम अनुसार संवेगात्मक बुद्धि के सभी तत्व जैसे संवेगों का प्रबंधन, स्वयं का अभिप्रेणन, सामाजिक कौशल, समानुभूति एवं आत्मजागरुक्ता शैक्षिक उपलब्धि पर सम्मलित रूप से प्रभाव डालते हैं। अनुसंधान से आये परिणामों के आधार पर शोधकर्ता ने वर्तमान शैक्षिक कार्यक्रम में संवेगात्मक बुद्धि को बढाने के लिए कार्यक्रमों को रखने की सिफारिशें की ।

डॉ. सप्रे मिनी (2017) ने अपने शोध कार्य में यह पाया कि इमोशनल इंटेलीजेंट का चिंता, तनाव और उदासी के साथ नकारात्मक संबंध है।

युसुफ, एच. टी., युसुफ, ए., गंबरी, ए. आई. (2015) ने छात्र–अध्यापको के संवेगात्मक बुद्धि लब्धि गुणांक का उनकी भविष्य उत्पादकता के प्रभाव का अध्ययन किया। उन्होने पाया कि महिलाओं और पुरुषों के संवेगात्मक बुद्धि गुणांक में सार्थक अंतर है। खोज ने खुलासा किया कि एक भावनात्मक रूप से बुद्धिमान छात्र–अध्यापक अधिक सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

बुनयान श. एल. बूनयान एस. ई. और लू वाई. एम. (2014) ने अपनी खोज में यह साबित किया है कि संवेगात्मक बुद्धि उन बहुत से कारणों में से एक है जिन पर बच्चों की शैक्षिक सफलता निर्भर करती थी। शोध से यह तथ्य भी प्रदर्शित करता है कि महिलाओं का माध्य स्कोर पुरुषों के माध्य स्कोर से कम है, जबकि लिंग के मध्य संवेगात्मक बुद्धि का अंतर सार्थक नहीं है।

प्रीति भदौरिया (2013) की खोज इस बात पर ज़ोर देती है कि भावनात्मक बुद्धि व सामाजिक कौशल ना केवल छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है बल्कि इसका प्रभाव उनकी भविष्य की उपलब्धि पर भी अपना प्रभाव छोड़ती है । इस अन्वेषण के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि के अभाव में छात्रों की सफलता की संभावना कम होती है, साथ ही इसकी कमी कमजोर व्यक्तित्व व योग्यताओं के अभाव की ओर इंगित करती है।

चेव, बी. एच. ज़ैन ए. एम. हसन एफ. (2013) ने अपनी शोध कार्य से ये सुझाव दिए है कि संवेगात्मक बुद्धि सामाजिक व्यवहार, उत्तम शैक्षिक उपलब्धि, समानुभूति के भाव जागृत करने में आवश्यक भूमिका निभाती है। उन्होने सिफ़ारिश की कि संवेगात्मक बुद्धि मेडिकल के विध्यार्थियों की शैक्षिक गुणवत्ता के साथ दृ साथ मरीजों व डॉक्टर के मध्य के विश्वास को भी बढाती है ।

एक अन्य शोध के अनुसार (बबली आर. रश्मि एस. व सपना एस. 2013) इमोश्नल इंटेलिजेंस तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच में सकारात्मक संबंध है। साथ ही उनकी खोज इस बात का भी खुलासा करती है कि उपलब्धि अभिप्रेरण और संवेगात्मक बुद्धि में धनात्मक संबंध है। यह शोध कार्य इस बात का भी पक्षधर है कि उच्च, औसत तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरण वाले छात्रों का संवेगात्मक बुद्धि गुणांक भी भिन्न होता है।

मोहजन एम. ए. एम. हसन एन. हलील एन. ए. (2013) ने अपनी शोध द्वारा सिफ़ारिश की कि संवेगात्मक बुद्धि के मूल्यों का परिपालन महत्वपूर्ण है; तथा शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने में इसकी उपयोगिता को स्वीकारा है। आंकड़ों से आए नतीजो से उन्होने ये भी खुलासा किया कि संवेगात्मक बुद्धि के दो कार्यक्षेत्रों (भावों की समझ और स्वयं के भावों का मूल्यांकन) का सीधा संबंध छात्रों की उपलब्धि के साथ है।

लेबबी एस. लूनेंबुर्ग एफ़. सी. स्लेट जे. आर. (2012) ने इस खोज में यह पाया है कि विद्यालयों के प्रबन्धकों द्वारा संवेगात्मक बौद्धिक कौशल के विकास पर कम ध्यान दिया जा रहा है । खोजकर्ताओं ने इस बात को स्वीकारा कि संवेगात्मक बुद्धि शैक्षिक योग्यताओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अनुसंधान कर्ताओं ने विद्यालयों में संवेगात्मक बौद्धिक कौशल के सफल परिपालन के लिए विद्यालय के प्रधानाचार्य को जिम्मेदार माना है।

बारबारा ए. एफ. (2008) ने अपने शोध कार्य द्वारा यह खुलासा किया कि जिन विद्यार्थिओं ने संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण में अधिक योग्यता प्रदर्शित की, वे उसकी झलक अन्य शैक्षिक परीक्षाओं में प्रदर्शित करने में भी सफल रहे।

एक बहुत विशेष शोध के अनुसार वो छात्र जो शैक्षिक क्षेत्र में खतरे में है यानि जिनके फ़ेल होने या विद्यालय छोड़ने का डर बना रहता है उनके संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव भी उनकी उपलब्धि पर पड़ता है। इसके अतिरिक्त इस शोध के परिणाम इस बात की भी वकालत करते है कि अध्यापकों के भावनात्मक बुद्धि लब्धि गुणांक और विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में गहरा संबंध है। लेस्लिए, के(2007)।

उपरोक्त सभी संबंधित साहित्य की समीक्षा करने के पश्चात् यह कहा जा सकता हैं कि संवेगात्मक बुद्धि और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में संबंध है।

शोध उद्देश्य

इस शोध का उद्देश्य निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर की खोजना है :

1. क्या संवेगात्मक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक संबंध है?
2. क्या संवेगात्मक बुद्धि के तत्वों का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक सहसंबंध है ?
3. क्या पुरुषों और महिलाओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर है?
4. क्या सरकारी और गैर–सरकारी विद्यालयों के बच्चों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर है?
5. क्या विभिन्न विषयों का चयन करने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर है?

परिकल्पना

1. संवेगात्मक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक संबंध है।
2. संवेगात्मक बुद्धि के तत्वों का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक सहसंबंध है ।
3. पुरुषों और महिलाओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है ।
4. सरकारी और गैर–सरकारी विद्यालयों के बच्चों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है ।
5. विभिन्न विषयों का चयन करने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है ।

प्रणाली

शोध प्रारूप

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक–सहसंबंध विधि के प्रयोग द्वारा भावनात्मक समझ और विद्यालयों के छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में संबंध की जाँच की गई। साथ ही संवेगात्मक बुद्धि के तत्वों के शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव की भी जाँच की गई। प्रस्तुत शोध कार्य में ये भी जानने का प्रत्यन किया गया कि लिंग, विद्यालयों के प्रकार तथा विभिन्न विषयों के विद्यार्थियों के भावनात्मक बुद्धि लब्धि में कितना अन्तर है ।

सैंपलिंग तकनीक

इस शोध में आकड़े एकत्रित करने के लिए साधारण यादृच्छिक प्रणाली अपनाई गई। दिल्ली राजधानी क्षेत्र से सरकारी तथा गैर सरकारी (प्राइवेट) स्कूल के 430 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना गया।

न्यादर्श संकलन

न्यादर्श संकलन हेतु प्रश्नावली उपकरण का प्रयोग किया गया। दिल्ली राजधानी क्षेत्र के 6 सरकारी और गैर–सरकारी क्षेत्र में लगभग 430 प्रश्न–पत्र बांटे गए। इन में से 402 प्रश्न–पत्र पूरे भरे हुए थे। जिसमें से आउटलायेर्स निकलने के बाद शुद्ध न्यादर्श की संख्या 386 को चुना गया । जिसमें से 196 महिलाएं थी और 190 पुरुष शामिल थे । सरकारी और गैर–सरकारी विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 192 और 194 थी तथा आर्ट्स, कॉमर्स व साइंस के विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 131, 133 और 122 थे ।

शोध उपकरण

इमोशनल इंटेलिजेंस

शोध के लिए संवेगात्मक बुद्धि का परिक्षण करने के लिए अरुण कुमार के द्वारा बना गया मानक प्रश्न पत्र 'इमोशनल इंटेलिजेंस स्केल' का प्रयोग किया गया । यह स्केल चार विभिन्न में विभाजित है जो इस प्रकार हैं :–

भावों की समझ, अभिप्रेरणा की समझ, समानुभूति और रिश्तों का प्रबंधन

भावों की समझ

यह किसी व्यक्ति विशेष की अपने और दूसरों के भावों, विचारों व परिस्थितियों को समझने की योग्यता है।

अभिप्रेरणा की समझ

यह एक ऐसी योग्यता है जिसमें व्यक्ति आशावादी तथा पहल करने की प्रवृति के साथ उच्च उपलब्धि के लिए प्रेरित रहता है।

समानुभूति

यह योग्यता किसी व्यक्ति को स्वयं की मानसिक स्थितियों के साथ–साथ दूसरों की भावनाओं को समझने पहचानने और महसूस की समझ पैदा करती है।

रिश्तों का प्रबंधन

यह गुण मनुष्य में साथ रिश्तों को बेहतर तरीके से सँभालने की समझ उत्पन्न करता है और मानव रिश्तों का बेहतर प्रबंधन कर पाता है।

शैक्षिक उपलब्धि

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करने के लिए विद्यार्थियों के वार्षिक अंक (CGPA) रिकॉर्ड किए गए।

आँकड़ो का विश्लेषण (परिणाम विश्लेषण)

परिकल्पना H $_1$

संवेगात्मक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक संबंध है

तालिका 1.1
Correlations[b]

		EI	ACADEMICMARKS
EI	Pearson Correlation	1	.273**
	Sig. (2-tailed)		.000
Academic Marks	Pearson Correlation	.273**	1
	Sig. (2-tailed)	.000	

**. Correlation is significant at the 0.01 level (2-tailed).
b. Listwise N=386

तालिका 1.1 का स्पष्टीकरणः

तालिका 1.1 के अवलोकन करने के पश्चात् यह ज्ञात होता है कि संवेगात्मक बुद्धि एवम् शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसंबंध है। यह संबंध 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः प्रथम परिकल्पना कि संवेगात्मक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक संबंध है स्वीकृत की जाती है ।

परिकल्पना H 2

संवेगात्मक बुद्धि के तत्वों का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक सहसंबंध है।

तालिका 1.2
Correlations

		Academic Marks	EI	UE	UM	EM	HR
Academic Marks	Pearson Correlation	1	.273**	.149**	.206**	.224**	.250**
	Sig. (2-tailed)		.000	.003	.000	.000	.000
	N	386	386	386	386	386	386
EI	Pearson Correlation	.273**	1	.648**	.798**	.809**	.820**
	Sig. (2-tailed)	.000		.000	.000	.000	.000
	N	386	386	386	386	386	386
UE	Pearson Correlation	.149**	.648**	1	.372**	.382**	.462**
	Sig. (2-tailed)	.003	.000		.000	.000	.000
	N	386	386	386	386	386	386
UM	Pearson Correlation	.206**	.798**	.372**	1	.544**	.494**
	Sig. (2-tailed)	.000	.000	.000		.000	.000
	N	386	386	386	386	386	386
EM	Pearson Correlation	.224**	.809**	.382**	.544**	1	.517**
	Sig. (2-tailed)	.000	.000	.000	.000		.000
	N	386	386	386	386	386	386
HR	Pearson Correlation	.250**	.820**	.462**	.494**	.517**	1
	Sig. (2-tailed)	.000	.000	.000	.000	.000	
	N	386	386	386	386	386	386

**. Correlation is significant at the 0.01 level (2-tailed).

तालिका 1.2 का स्पष्टीकरण

तालिका 1.2 का ध्यान पूर्वक निरीक्षण करने के बाद यह बात प्रमाणित होती है कि संवेगात्मक बुद्धि के चारों तत्वों (भावों की समझ, अभिप्रेरण की समझ, समानुभूति और संबंधों का संचालन) का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक धनात्मक सहसंबंध है । अतः परिकल्पना 2 संवेगात्मक बुद्धि के तत्वों का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक सहसंबंध है, स्वीकृत की जाती है । साथ ही शोधकर्ता ने यह भी पाया की चारों तत्वों में से समानुभूति और संबंधों का संचालन का शैक्षिक उपलब्धि के साथ अधिक सुदृढ़ संबंध है।

परिकल्पना H 3

पुरुषों और महिलाओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 1.3
Group Statistics Table 1.3

	Gender	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean
EI	Female	196	73.6633	8.03383	.57385
	Male	190	72.8842	7.71086	.55940

तालिका 1.4
Independent Samples Test

		Levene's Test for Equality of Variances		t-test for Equality of Means						
		F	Sig.	t	Df	Sig. (2-tailed)	Mean Difference	Std. Error Difference	95% Confidence Interval of the Difference	
									Lower	Upper
EI	Equal variances assumed	1.490	.223	.972	384	.332	.77905	.80191	-.79762	2.35573
	Equal variances not assumed			.972	383.963	.332	.77905	.80139	-.79661	2.35472

तालिका 1.3 का स्पष्टीकरण

तालिका 1.3 को ध्यान से देखने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि छात्राओं के भावनात्मक बुद्धि लब्धि अंकों का माध्य 73.6633 है, तो वहीं छात्रों के भावनात्मक बुद्धि लब्धि अंकों का माध्य 72.8842 है। जो दर्शाता है कि पुरुष और महिला उत्तरदाताओं के भावनात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है। अतः हमारी परिकल्पना कि पुरुषों और महिलाओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत नहीं होती है।

तालिका 1.4 का स्पष्टीकरण

तालिका 1.4 में लेवेंस टेस्ट के परिणाम को ध्यान से देखने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि एफ॰ मूल्य 1.490 जो कि .223 के सार्थकता स्तर पर सार्थक जिसका अर्थ है कि सार्थकता का स्तर 5% के सार्थकता के स्तर से ऊपर है जो दर्शाता है कि शून्य परिकल्पना समूहों में परिवर्तनशीलता समान है अस्वीकृत नहीं की जाती। अतः कहा जा सकता है कि समूहों में सजातीयता विद्यमान है। इसके साथ ही समान कल्पित विचलन 'टी' का मान .972 हैं जो 5% के स्तर पर सार्थक नहीं है जो इंगित करता है कि हमारी परिकल्पना कि पुरुषों और महिलाओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत नहीं होती है। अतः कहा जा सकता है कि पुरुष और महिला उत्तरदाताओं के भावनात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना H 4

क्या सरकारी और गैर–सरकारी विद्यालयों के बच्चों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर है?

तालिका 1.5

	School Type	*N*	*Mean*	*Std. Deviation*	*Std. Error Mean*
EI	*GOVT*	*192*	*75.4115*	*8.38051*	*.60481*
	PVT	*194*	*71.1701*	*6.72609*	*.48291*

तालिका 1.6

		t-test for Equality of Means						
		t	Df	Sig. (2-tailed)	Mean Difference	Std. Error Difference	95% Confidence Interval of the Difference	
							Lower	Upper
EI	Equal variances assumed	5.486	384	.000	4.24136	.77308	2.72136	5.76135
	Equal variances not assumed	5.480	365.249	.000	4.24136	.77395	2.71940	5.76331

तालिका 1.5 का स्पष्टीकरण

तालिका 1.5 को ध्यान से देखने के पश्चात ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालयों के उत्तरदाताओं के संवेगात्मक बुद्धि के अंकों का मध्य 75.4115 जबकि प्राइवेट विद्यालयों के उत्तरदाताओं के संवेगात्मक बुद्धि के अंकों का मध्य 71.1701 जो दर्शाता है कि सरकारी व प्राइवेट विद्यालयों के छात्रों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर है।

तालिका 1.6 का स्पष्टीकरण

तालिका 1.6 को देखने के बाद यह कहा जा सकता है कि समान कल्पित विचलन 'टी' का मान 5.486 हैं जो 0% के सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जो इंगित

करता है कि हमारी परिकल्पना कि सरकारी विद्यालयों और प्राइवेट विद्यालयों के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि सरकारी विद्यालयों और प्राइवेट विद्यालयों के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना H 5

विभिन्न विषयों का चयन करने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है

तालिका 1.7

Oneway

Descriptives

EI

	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error	95% Confidence Interval for Mean		Minimum	Maximum
					Lower Bound	Upper Bound		
ART	131	72.0000	8.34451	.72906	70.5576	73.4424	44.00	88.00
COMMERCE	133	73.1053	7.95276	.68959	71.7412	74.4693	49.00	90.00
SCIENCE	122	74.8443	7.02065	.63562	73.5859	76.1026	59.00	88.00
Total	386	73.2798	7.87595	.40088	72.4916	74.0680	44.00	90.00

तालिका 1.8

Test of Homogeneity of Variances

EI

Levene Statistic	df1	df2	Sig.
1.349	2	383	.261

तालिका 1.9

ANOVA

EI

	Sum of Squares	Df	Mean Square	F	Sig.
Between Groups	517.215	2	258.608	4.239	.015
Within Groups	23364.567	383	61.004		
Total	23881.782	385			

तालिका 1.10

Homogeneous Subsets

Ei

	Stream	N	Subset For Alpha = 0.05	
			1	2
Tukey Hsd[a,B]	Art	131	72.0000	
	Commerce	133	73.1053	73.1053
	Science	122		74.8443
	Sig.		.494	.176

Means For Groups In Homogeneous Subsets Are Displayed.

A. Uses Harmonic Mean Sample Size = 128.485.

B. The Group Sizes Are Unequal. The Harmonic Mean Of The Group Sizes Is Used. Type I Error Levels Are Not Guaranteed.

वन वे अनोवा तालिका 1.7 का स्पष्टीकरण : **तालिका 1.7 को ध्यान से देखने के पश्चात ज्ञात होता है कि कला विषय के छात्रों का (माध्य= 72.00), वाणिज्य विषय के छात्रों का (माध्य =73.105) तथा विज्ञान के विषय के छात्रों का (माध्य= 74.84) एक दूसरों से भिन्न है। इसके अतिरिक्त सजातीयता की जांच करने वाली तालिका (1.8) प्रदर्शित करती है कि लेवेंस आंकड़े 1.349 है, जो .261 स्तर पर सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि शून्य परिकल्पना कि छात्रों के समूहों के समान विचलन है अस्वीकृत नहीं होती है। अतः यह समझा जा सकता जा है कि समान विचलन की अवधारणा मान्य है।**

अनोवा तालिका (1.9) द्वारा यह प्रदर्शित होता F मूल्य 4. 239 है जो 0.015 सार्थकता के स्तर पर सार्थक है, जो दर्शाता है कि संवेगात्मक बुद्धि विभिन्न विषयों के द्वारा प्रभावित हुई है। आंकड़े दर्शाते है कि विभिन्न विषयों के

समूहों के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि हमारी परिकल्पना कि विभिन्न विषयों का चयन करने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत होती है।

तालिका 1.11
Post Hoc Test

Multiple Comparisons

Dependent Variable: Ei

	(I) Stream	(J) Stream	Mean Difference (I-J)	Std. Error	Sig.	95% Confidence Interval	
						Lower Bound	Upper Bound
Tukey Hsd	Art	Commerce	-1.10526	.96144	.484	-3.3674	1.1569
		Science	-2.84426*	.98271	.011	-5.1564	-.5321
	Commerce	Art	1.10526	.96144	.484	-1.1569	3.3674
		Science	-1.73900	.97914	.179	-4.0428	.5648
	Science	Art	2.84426*	.98271	.011	.5321	5.1564
		Commerce	1.73900	.97914	.179	-.5648	4.0428
Dunnett T3	Art	Commerce	-1.10526	1.00353	.613	-3.5164	1.3058
		Science	-2.84426*	.96724	.011	-5.1689	-.5196
	Commerce	Art	1.10526	1.00353	.613	-1.3058	3.5164
		Science	-1.73900	.93784	.182	-3.9928	.5148
	Science	Art	2.84426*	.96724	.011	.5196	5.1689
		Commerce	1.73900	.93784	.182	-.5148	3.9928

*. The Mean Difference Is Significant At The 0.05 Level.

पोस्ट होक की तालिका (1.11) का निरीक्षण करने के पश्चात् यह ज्ञात होता है कि TUKEY HSD के सभी मूल्य .5 से कम है जो दर्शाते है कि समूहों के माध्यों का अन्तर 0.05 सार्थकता के स्तर पर सार्थक है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के परिणामों से यह निष्कर्ष निकला जा सकता है कि अनेक शोधों की भांति इस शोध के परिणाम भी यही सिद्ध करते है कि भावनात्मक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सकारात्मक संबंध है। उसके प्रत्येक तत्व का शैक्षिक उपलब्धि के साथ संबंध है। परन्तु शोधकर्ता ने पाया कि सफलता के सूचक के रूप में भावनात्मक बुद्धि जितना उपयोग किया जा सकता है वह नहीं हो पा रहा है। विद्यालयों में भावनात्मक समझ को विकसित करने के लिए आवश्यक कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए क्योंकि भावनात्मक समझ व्यक्तिगत सफलता के साथ–साथ चारों ओर स्वस्थ, खुशीमय तथा अपराध मुक्त वातावरण बनाने में सहायक होता है। भावनात्मक विकृति मानसिक विकृति से अधिक ख़तरनाक होती है। चारों ओर बढ़ते अपराध इस ओर इशारा कर रहे है कि हमें भावनात्मक समझ का विकास करने के लिए शीघ्र ही आवश्यक कदम उठाने पड़ेंगे।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *AL-SAHAFI FAISAL (2016).“TheInfluence of Emotional Intelligence towards Academic Achievement among Gifted Students in Saudi Arabi”http://eprints.usm.my/30397/1/AL-SAHAFI_FAISAL.pdf*
2. *Amalu, M. N. (2018). “Emotional Intelligence as Predictor of Academic Performance among Secondary School Students in Makurdi Metropolis of Benue State.”International Journal of Scientific Research in Education,11(1), 63-70.http://www.ijsre.com.*
3. *Anju E.n, Kubendran V (2015).“Determinants of Emotional Intelligence – Theoretical Perspective”. Innovare Journal of Business Management Vol.3 Issue 1 2015 (Apr- Jun). Online ISSN 2321-6816. 2015:4: PP 7-10.https://innovareacademics.in/journals/index.php/ijbm/article/view/5050*
4. *A.S.Arul Lawrence, T.Deepa (2013).“Emotional Intelligence and Academic Achievement of High School Students in Kanyakumari District”. IJPSS Volume 3, Issue 2 ISSN: 2249-5894, 2013:2:101-107. http://www.ijmra.us*
5. *Barbara A. Fatum (2008). “The Relationship between Emotional Intelligence and Academic Achievement in Elementary School children” University of San Francisco, California.*
6. *BhadouriaPreeti(2013).“Role of Emotional Intelligence for Academic Achievement for Students” Research Journal of Educational Sciences. Vol. 1(2), 2013:5: 8-12. www.isca.in*

7. *Bhat, A.A. (2017). "Emotional Intelligence of Higher Secondary School Students With Respect to Their Gender." The International Journal of Indian Psychology ISSN 2348-5396 (e) | ISSN: 2349-3429 (p). Vol. 5, Iss. 1. October-December, 2017: PP 37-38. http://www.ijip.in*
8. *Boon How Chew, Azhar Md Zain, Faezah Hassan. (2013). "Emotional Intelligence and Academic Performance in First and Final Year Medical Students: A Cross-Sectional Study"BMC Medical Education 2013:27:13-44. https://bmcmededuc.biomedcentral.com/articles/10.1186/1472-6920-13-44*
9. *Dr. S. Chamundeswa (2013). "Emotional Intelligence and Academic Achievement among Students at the Higher Secondary Level" International Journal of Academic Research in Economics and Management Sciences. Vol. 2, No. 4 ISSN:2226-3624. DOI: 10.6007/IJAREMS/v2-i4/126 2013:7:178-187. http://dx.doi.org/10.6007/IJAREMS/v2-i4/126*
10. *Hossein Ranjbar, Seyed Hossein Khademi, and Hossein Namdarareshtanab (2017)."The Relation between Academic Achievement and Emotional Intelligence in Iranian Students: A Meta-Analysis", ActaFacultatisMedicaeNaissensis2017:30:65-7 Volume 34: Issue 1 http://doi.org/10.1515/afmnai-2017-0008*
11. *Labby. S. Lunenburg F.C. Slate J.R.(2012). "Emotional Intelligence and Academic Success: A Conceptual Analysis for Educational leaders". NCPEA Version1.2: Jan13, 2012 Us/ Central. http://www.nvpeapublications.org*
12. *MaizatulAkmalMohdMohzan, Norhaslinda Hassan, NorhafizahAbdHalil (2013). "The Influence of Emotional Intelligence on Academic Achievement". Elsevier Procedia - Social and Behavioral Sciences 90, 2013: 303 – 312. www.sciencedirect.com*
13. *Mark Kasa1 and Ho Hai Inn2 (2013). "Relationship between Emotional Intelligence and students Academic Performance –Role of Ethnic Factor".Researchgate.DOI: 10.13140/RG.2.1.3561.0327. 2013:11.https://www.researchgate.net/publication/282636357*
14. *Mishra, P. (2012)."A Study of the Effect of Emotional Intelligence on Academic Achievement of Jaipur Senior Secondary Students." International Journal of Educational Research and Technology. IJERT: Volume 3 [4]. Dec.2012: PP 25 -28. www.soeagra.com/ijert/ijert.htm*
15. *NarasgoudaShusmaAppasaheb(2016)."A Study of Emotional Intelligence, Self- Esteem And Personal Effectiveness In Relation To Academic Achievement of Student-Teachers Of Colleges of Education." POST GRADUATE DEPARTMENT OF STUDIES IN EDUCATION, KARNATAK UNIVERSITY, DHARWAD. India.*
16. *Pope Debbie, Roper Claire, Qualter Pamela (2011)."The Influence of Emotional Intelligence on Academic Progress and Achievement in UK University Students." Assessment & Evaluation in Higher Education. 2011:15:1-12.http://dx.doi.org/10.1080/02602938.2011.583981*
17. *Roy Babli, Sinha Rashmi, SumanSapna (2013). "Emotional Intelligence and Academic Achievement Motivation among Adolescents: A Relationship Study."Journal of Arts, Science & Commerce (E-ISSN 2229-4686 ISSN 2231-4172), Vol. – IV, Issue – 2013:2:126-130. www.researchersworld.com*
18. *Shafeeg Ali Bunyaaan, Siok Inn Bunyaan, Yoke Mei Loo(2014)"Emotional Intelligence and Academic Achievement: A Study Among Students of a Private University in Malaysia" Taylor's 7th Teaching and Learning Conference 2014 Proceedings pp 55-66. https://link.springer.com/chapter/10.1007/978-981-287-399-6_5*
19. *Yusuf, H.T., Yusuf, A., Gambari A.I. (2015). " Emotional Intelligence of the Students- Teachers in Relation to their Future Productivity." The African symposium ISSN NO- 2326-8077. Vol.15 no-1. 2015:7.PP:25-34. https://www.researchgate.net/publication/287999909_EMOTIONAL_INTELLIGENCE_OF_STUDENT_-TEACHERS_IN_RELATION_TO_THEIR_FUTURE_PRODUCTIVITY*